लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

ब्रह्मपुत्र : ओर से छोर तक

✍ डॉ॰ रीतामणि वैश्य

कहते हैं मनुष्य प्रकृति के समस्त जीवों में श्रेष्ठ है। मनुष्य ब्रह्मा की अंतिम संतान है। घर का छोटा यों भी सबसे लाड़ला होता ही है। संभवतः इसी लाड़ के परिणामस्वरूप ही ब्रह्मा ने मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान की और उसे एक सुखद जीवन मिला। मनुष्य के प्रति उनकी सबसे बड़ी देन रही दिमाग यानी चिंतन-शक्ति। उसी के बलबूते पर वह क्रमशः अपना विकास करता गया। मानव-सभ्यता की इस विकास-यात्रा में नद-नदी की अहम भूमिका रही। दुनिया की समस्त सभ्यताएँ मूलतः नदी-केन्द्रिक हैं। इतिहास साक्षी है कि भारत की सिंधु सभ्यता का विकास सिंधु नद के तट पर हुआ। भारतभूमि में नद-नदियों के साथ धार्मिक मान्यताओं का संबंध अति प्राचीन है। यहाँ नदी को माता कहा जाता है, देवी का ज्ञान किया जाता है। धार्मिक विश्वास सभ्यता को और अधिक संपन्न बनाता है। सिंधु नद का उद्गम-स्थल है पावन हिमालय अर्थात् शिवजी का निवास-स्थल। वैदिक युग से ही यह नद प्रसिद्ध है। शास्त्र के अनुसार भी इस नद का पानी अत्यंत लाभकारी है। यह सिंधु का आशीर्वाद ही था कि इसके तट पर रहनेवाले लोगों की जीवन-प्रणाली का एक उच्च मानदंड होता था। ईंट से घर बनाना, सुव्यवस्थित रास्ते और नालियाँ, सामुहिक स्नानागार, फसल का भंडार, कुँआ, खेती-बाड़ी, जानवरों का पालना, मूर्ति बनाना, यातायत-व्यवस्था के रूप में नाव और बैलगाड़ी का व्यवहार, बर्तन बनाना, अलंकार बनाना, कपड़ा बुनना, मुद्रा का व्यवहार, विनिमय-प्रथा का प्रचलन, पेड़ एवं जानवरों की पूजा, शिल्प-कला आदि सिंधु सभ्यता के सांस्कृतिक जीवन की संपन्नता के परिचायक हैं।

असम भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में स्थित एक मनोरम प्रदेश है। ब्रह्मपुत्र असम का बृहत् नद है। इसी की कृपा से असम और इसका जनजीवन दोनों हरियाली से भरे हैं। असमीया जनगण के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी पक्ष ब्रह्मपुत्र से आवेष्टित हैं। ब्रह्मपुत्र असम के प्राण है। समस्त असमीया जाति एवं समाज ब्रह्मपुत्र पर आधारित है। असमीया समाज इससे कई अपेक्षाएँ रखता है, इसके पुरुषत्व से उपकृत होना चाहता है। क्योंकि ब्रह्मपुत्र नदी नहीं, नद है। पुल्लिंग रूप में

ब्रह्मपुत्र की कल्पना होती है । इसीलिए जब गंगा 'मैया' होती है, ब्रह्मपुत्र 'बाबा' होता है । सोण, सिंधु, हिरणाक्ष, ब्रह्मपुत्र, कोक, घर्घरा और शतद्रु- इन सात नदों में ब्रह्मपुत्र का विशेष स्थान है क्योंकि ब्रह्मपुत्र ब्रह्मा का पुत्र है । असमीया लोगों का ब्रह्मपुत्र पर पूरा भरोसा है और वे किसी भी विपत्ति का सामना बाबा ब्रह्मपुत्र के भरोसे ही करते हैं।

ब्रह्मपुत्र महा शक्तिशाली है । शक्ति एवं सृजनशीलता उसे पैत्रिक धरोहर के रूप में मिली है। कभी यह अपने पानी से धरती में हरे रंग का चित्र बनाता है, तो कभी मनुष्य की अदक्षता प्रमाणित करता हुआ अपने रौद्र रूप का प्रकाश बाढ़ के रूप में करता है । पर इस संहारलीला की समाप्ति करते हुए वह खाद के रूप में सृष्टि का आधार छोड़ जाता है । हमेशा ब्रह्मपुत्र से हमारी यही आकांक्षा का होना अत्यन्त स्वाभाविक है और जब वह हमारी जिम्मेदारी नहीं लेता, तब तो आमजन का क्या, कवि का कोमल हृदय भी गरज उठता है । भारतीय लोगों की दीन-हीन दशा देखकर ही सिंधु की निर्लिप्त स्थिति पर कवि नागार्जुन ने 'हे निर्मम तुमको कौन कहे' कहा था । इसी तरह असमीया लोगों का हाहाकार सुनकर भी चुपचाप बहनेवाले ब्रह्मपुत्र के गीति कवि डॉ॰ भूपेन हाजरिका ने 'निर्लज अलसभावे बोवा किय ?' कहा है ।

ब्रह्मपुत्र ब्रह्मापुत्र है । पुराण-शास्त्र के अनुसार ऋषिवर शांतनु ने ब्रह्मा के वीर्य को भार्या अमोघा में स्थापित कर ब्रह्मपुत्र को जन्म दिया था । अमोघा अति सुंदरी थी । एक बार अमोघा के दर्शन से ब्रह्मा का वीर्य-स्खलन होता है । शांतनु ने उस वीर्य का पान किया और अमोघा के गर्भ में प्रदान किया । यथासमय अमोघा ने उस वीर्य से जलराशि का प्रसव किया । उस जलराशि के साथ एक रत्नमालाविभूषित, नीलांबर परिधान किये हुए किरीटधारी ब्रह्मा का ही जैसा रक्त-गौर वर्ण, चतुर्भुज, पद्मविद्याध्वज शक्तिशाली पुरुष भी था । यही ब्रह्मपुत्र था । शांतनु ने ब्रह्मपुत्र को कैलाश, गंधमादन, जारुधि और संवर्तक - इन चार पर्वतों के बीच स्थापित किया । वहाँ ब्रह्मपुत्र जलराशि के रूप में बढ़ने लगा । कालांतर में परशुराम ने ब्रह्मपुत्र का पथ खोलकर उसे प्रवाहित कराया ।

हिन्दू शास्त्रों में ब्रह्मपुत्र को परम पवित्र नद माना गया है । ब्रह्मपुत्र की गिनती देवताओं में की जाती है । इसका उत्पत्ति-स्थल भी तो पवित्र हिमालय है । परशुराम की कथा के संयोजन से ब्रह्मपुत्र की गरिमा मानो कई गुना बढ़ गई है । दरअसल में ब्रह्मपुत्र और परशुराम दोनों को एक-दूसरे का आभारी होना चाहिए । क्योंकि ब्रह्मपुत्र-कुंड में स्नान कर परशुराम की मातृहत्या के पाप का खंडन हुआ था और ब्रह्मपुत्र को बंधन से मुक्त करने का काम परशुराम ने किया था । परशुराम महावीर थे। जमदग्नि ऋषि उनके पिता थे । जमदग्नि के पिता ब्राह्मण ऋचीक थे और क्षत्रिय राजा गाधि की कन्या उनकी माता थी । अतः जमदग्नि में ब्राह्मणत्व और वीरता दोनों गुण थे । जमदग्नि ने सूर्यवंशीय

राजा रेणु या प्रसेनजीत की कन्या रेणुका से विवाह किया था । रेणुका और जमदग्नि के पाँच पुत्र हुए, जिनमें से कनिष्ठ थे परशुराम । स्नान के लिए जाते समय एक दिन रेणुका ने जलकेलि कर रहे एक युवक और एक युवती को देखा । उन्हें देखकर रेणुका के मन में अपवित्र भाव आया । इस अपराध के लिए जगदग्नि ने सभी पुत्रों को एक-एक करके माता रेणुका के शिरच्छेद का आदेश दिया । प्रथम चारों पुत्र क्रमशः रुमवन्त, सुसेन, वसु और विश्ववसु इस कार्य को करने में असफल रहे । पितृ-आज्ञा का पालन कर परशुराम ने कुल्हाड़ी से मातृ रेणुका का शिरच्छेद किया । इस आनुगत्य के कारण जमदग्नि से परशुराम को दो वर भी मिले । एक यह था कि वे चिरंजीवी होंगे । दूसरा वर उनके समकक्ष किसी वीर के न होने का था । परशुराम के अनुरोध से जमदग्नि ने रेणुका को प्राणदान भी दिये थे । जो होना था वह हो चुका था और परशुराम को जो मिलना था मिल गया था । पर मातृहत्या के लिए व्यवहृत कुल्हाड़ी उनका हाथ छोड़ने का नाम नहीं ले रही थी । पितृभक्त होना तो बड़ी महानता होती है, पर मातृहंता होने की नीचता मानो उनकी कुल्हाड़ी सबसे बखान कर रही थी । मातृहत्या जैसे महापाप के खंडन की क्षमता रखनेवाले पवित्र तीर्थ की तलाश में शायद वह वीर थक चुका था । ऐसी पवित्रता ब्रह्मपुत्र में थी । तब वह प्रवाहित नहीं हुआ था । ब्रह्मपुत्र को शांतनु ने जहाँ स्थापित किया था, वहाँ उसकी जलराशि बढ़ती जा रही थी । देव, देवियाँ एवं अप्सराएँ सागर-सदृश मनोरम और शीत-निर्मल सलिल-युक्त इस ब्रह्मपुत्र-कुंड में स्नान करते थे, वहाँ का जल पीते थे । पितृ जमदग्नि के आदेश से परशुराम ने इस ब्रह्मपुत्र-कुंड में स्नान कर अपने पाप का खंडन किया । अर्थात् वहाँ परशुराम को अपने पाप से मुक्ति मिली । इसके विपरीत दुनिया की मंगलकामना से परशुराम ने अपनी कुल्हाड़ी से ब्रह्मपुत्र को प्रवाहित कराया । यही उनकी कुल्हाड़ी उनके हाथ का साथ छोड़ती है और तब से ब्रह्मपुत्र घाटी के लोगों को यह ब्रह्मा का पुत्र पालित एवं पोषित करता आया है । ब्रह्मपुत्र-कुंड ब्रह्म-कुंड नाम से भी जाना जाता है । दुर्गम स्थान पर अवस्थित होने के कारण ब्रह्म-कुंड तक भक्तों का पहुँच पाना असंभव है । अतः ब्रह्मपुत्र-कुंड का पानी बहकर जिस समतल भूमि पर पड़ा है उसे परशुराम-कुंड माना जाता है । ब्रह्म-कुंड और परशुराम-कुंड दोनों अरुणाचल प्रदेश में स्थित हैं । देशी-विदेशी सैकड़ों पर्यटक आज भी यहाँ आते हैं और यहाँ स्नान कर पुण्य कमाते हैं । मकर-संक्रांति के दिन यहाँ स्नान करना परम पवित्र माना जाता है। इस दिन परशुराम-कुंड में कुंभ मेला-सी भीड़ लग जाती है । लोकविश्वास है कि जिनके माता-पिता जीवित हैं, उनके लिए यहाँ स्नान करना मना है । मातृ-हत्या के पाप के खंडन हेतु परशुराम वहाँ गये थे । अतः यह विश्वास चल पड़ा कि माँ-बाप के

साथ जान-बुझकर या अनजाने में भी अन्याय किया हो या हुआ हो, तो उनकी मृत्यु के बाद परशुराम-कुंड में स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं।

ब्रह्मपुत्र पापक्षय करने की असीम क्षमता रखता है। इसका प्रमाण स्वयं परशुराम हैं । इसी विश्वास से लोग केवल परशुराम-कुंड मे ही नहीं सर्वत्र ब्रह्मपुत्र के पवित्र पानी में स्नान करते हैं। शास्त्रीय विधि के अनुसार लोग ब्रह्मपुत्र की पूजा करते हैं । लोकविश्वास है कि चैत्र महीने की अशोकाष्टमी में ब्रह्मपुत्र की जलधारा और अधिक पवित्र हो उठती है। उस दिन दुनिया के सारे तीर्थ और सागर ब्रह्मपुत्र से मिलते हैं। जो जितेंद्रिय लोग उस दिन इस पवित्र नद में स्नान करते हैं, उन्हें परमपद मिलता है। शास्त्र में ब्रह्मपुत्र के उत्तरी-तट की धारा गंगा की मानी गई है- 'ब्रह्मपुत्रस्योत्तरभागे सदा बहति जाह्नवी।' इसीलिए ब्रह्मपुत्र के उत्तरी-तट का स्थान सदैव पुनीत माना जाता है।

ब्रह्मपुत्र हिम-तुंग-शृंगों की समष्टि हिमालय पर्वत से निकलकर बंगाल की खाड़ी में जा मिला है। इस लंबी परिक्रमा में इसने कई विश्व अभिलेख किये हैं। इस परिक्रमा में उसे घाटी के लोगों से ढेर सारा स्नेह भी मिला है। इसी के परिणामस्वरूप अपनी गति के साथ-साथ ब्रह्मपुत्र को कई नए नाम मिलते गये । चीन (तिब्बत), भारत एवं बांग्लादेश से ब्रह्मपुत्र गुजरता है । हिमालय के मानसरोवर के थोड़ी पूर्वी ओर स्थित टामचुक खामचार हिमवाह से ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति मानी गई है । ब्रह्मपुत्र की लंबाई लगभग 2880 किलोमीटर है। इनमें से 1625 किलोमीटर चीन (तिब्बत) में, 918 किलोमीटर भारत में और 337 किलोमीटर बांग्लादेश में है। इस यात्रा-पथ पर ब्रह्मपुत्र को जितने भी नाम मिले, यह ब्रह्मपुत्र पर लोगों का स्नेह ही है। शायद दुनिया के किसी भी नद या नदी को इतने नाम नहीं दिये गये हैं। केंद्रस्थल में इसका नाम है 'मुटछुङ छाङ्पो'। तत्पश्चात् इसका नाम पड़ा 'मघुङ छाङ्पो' और अंत में जो नाम पड़ा वह है 'छाङ्पो' । तिब्बत में भी इसके कई नाम हैं । इनमें से 'नरिचु चाङ्पो', 'टानजु खांपा', 'येरे छाङ्पो', 'कबेइचु' आदि प्रमुख हैं । भारत प्रवेश करते समय ब्रह्मपुत्र का नाम है 'छियाङ' और इसके बाद नाम 'दिहाङ' है। इसके अतिरिक्त 'थ्यापा', 'छेम' या 'छेङ्लाई' नाम से भी यह जाना जाता है। अन्त में दिबाङ और लोहित के साथ मिलकर जो रूप बना, वस्तुतः वही 'ब्रह्मपुत्र' है। ब्रह्मपुत्र बनते-बनते विशालकाय हो चुका है। गतिपथ की प्रारंभिक अवस्था में यह अत्यंत शांत है । किंतु इसके बाद समभूमि क्षेत्र पर पहुँचने से पूर्व यह कहीं-कहीं अत्यंत तीव्र रूप धारण करता है। असम में ब्रह्मपुत्र की गति धीर है। इसने यहाँ ढेढ़ा-मेढ़ा रास्ता भी नहीं अपनाया है। असम के विविध क्षेत्रों में ब्रह्मपुत्र को 'लोहित', 'बरलुइत', 'चिरिलुइत', 'बूढ़ालुइत' आदि नामों से जाना जाता है। असम के अतिक्रमण के बाद ब्रह्मपुत्र ने बांग्लादेश में प्रवेश किया है और इसने दक्षिणी रास्ता अपनाया है । यहाँ एक छोटे स्रोत का ही

नाम 'ब्रह्मपुत्र' है । मूल स्रोत 'यमुना' के नाम से जाना जाता है। गंगा के यहाँ प्रयोजन से इसका नाम पड़ा 'पद्मा' । बंगाल की खाड़ी से मिलने से पूर्व पद्मा मेघना से मिली है। पुराने जमाने में ब्रह्मपुत्र को 'लौहित्य', 'मंदाकिनी' आदि नामों से भी जाना जाता था।

'इयार्लुङ झाङ्व' ब्रह्मपुत्र द्वारा किये गये विश्व अभिलेखों में से प्रमुख है। 'इयार्लुङ झाङ्व' तीखी ढालोंवाली वह तंग घाटी है, जिसके बीच से यह नद बहता है। भारत में प्रवेश करने से पहले ब्रह्मपुत्र ने 'तामछा बारवा' नाम तुंग के पास अंग्रेजी 'इउ' (U) आकृति का एक मोड़ लेकर 'इयार्लुङ झाङ्व' दर्रे का निर्माण किया है। यह दुनिया का सबसे लंबा और गहरा दर्रा है। औसत के हिसाब से 'इयार्लुङ झाङ्व' की गहराई है 5 किलोमीटर और इसकी लंबाई 317 किलोमीटर है।

माजुली ब्रह्मपुत्र का अन्य एक विश्व अभिलेख है। यह दुनिया का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है। ब्रह्मपुत्र का यह द्वीप असम के जोरहाट जिले में है। वर्तमान असम में भू-कटाव के कारण माजुली की भूमि सिमटती आ रही है। प्राचीन काल में माजुली 'माजालि' या 'मजालि' नाम से जानी जाती थी। असमीया के प्रसिद्ध इतिहासकार नकुल चंद्र भूआँ का मानना है कि आहोम स्वर्गदेउ जयध्वज सिंह (1648-1663) के समय ही यह नदी द्वीप के रूप में प्रकट हुई थी। 'मा' और 'जुली' इन दोनों शब्दों के संयोग से 'माजुली' शब्द बना। 'मा' का अर्थ है लक्ष्मी और 'जुली' का तात्पर्य भंडारे से है। नाम से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस द्वीप की भूमि अत्यंत उर्वर होगी, यह फसलों से समृद्ध होगी। हाँ, कभी ऐसा होता भी था। पर आज माजुली की स्थिति बदल गई है। आर्थिक दृष्टि से यहाँ के आवासी हीन और क्षीण हो गये हैं। बाढ़ और भू-कटाव माजुली की सबसे बड़ी समस्याएँ हैं। जिस गति से माजुली का अपक्षरण हो रहा है, वह माजुली के अस्तित्व के लिए चुनौती है। अपक्षरण की तीव्रता का ही परिणाम है कि कभी 1256 वर्ग किलोमीटर की माजुली अब 929 वर्ग किलोमीटर से भी छोटी हो गई है।

माजुली की पहचान सिर्फ एक नदी-द्वीप की ही नहीं है। यह असम की सांस्कृतिक धरोहर है। वैष्णवों के पवित्र तीर्थस्तान के रूप में माजुली प्रसिद्ध है। महापुरुष शंकरदेव और माधवदेव के संस्पर्श से इस भूमि को जान मिली थी। शंकरदेव ने सबसे पहले माजुली के धुवाहाटा या बेलगुरि सत्र की स्थापना की थी। इसी सत्र में 1522 में शंकरदेव और माधवदेव का प्रथम साक्षात्कार हुआ था। शंकर-माधव के इस मिलन को असमीया साहित्य में 'मणिकांचन संयोग' की आख्या दी गई है क्योंकि इस मिलन के बाद दोनों ने साथ मिलकर असमीया समाज, साहित्य एवं संस्कृति को एक नई दिशा प्रदान की थी। अपक्षरण के कारण बेलगुरि सत्र

ब्रह्मपुत्र में एकाकार हो चुका है। फिर भी, शंकरदेव के आदर्श के आधार पर निर्मित छोटे-बड़े सत्रों से असम की सत्रीया-संस्कृति की धारावाहिकता बनी हुई है । असम की सत्रीया-संस्कृति के पीठस्थान माजुली में 60 सत्रों के होने की मान्यता है । पर स्वीकृत सत्रों की संख्या 22 हैं, जो इस प्रकार हैं - आउनीआटी, मढ़मूर, दक्षिणपाट, बेङेनाआटी, नतुन कमलाबारी, उत्तर कमलाबारी, भोगपुर, नतुन चामगुरि, पूरणि चामगुरि, बिहिमपुर, आदि बिहिमपुर, नरसिंह एलेङी, बर एलेङी, मलुवाल बर एलेङी, आदि एलेङी, साँकोपारा औवा, बेले सिद्धीया, गढ़मूर सरु सत्र, मध्य कमलाबारी, आधार सत्र और बालिचापरि बर एलेङी सत्र।

माजुली असम की सत्रीया-संस्कृति का प्राणकेंद्र है । रासलीला और भाओना माजुली की खास विशेषताएँ हैं । इनके अलावा यह बरगीत, सत्रीया नृत्य, दशावतार नृत्य, अप्सरा नृत्य, सूत्रधार, ओजापालि, झुमुरा नृत्य, चालि नृत्य आदि असमीया कला-संस्कृति के उपादानों से मुखर एक पीठस्थान बन चुका है। मृतशिल्प, प्राचीन अलंकार, काठ की मूर्ति, सिंहासन आदि हस्तशिल्प से भी माजुली सजा हुआ है । मुखौटाशिल्प माजुली की अन्य एक विशेषता है। प्रकृति के समस्त वैभव और विचित्रता से भरी माजुली कई जनजातियों की मिलनभूमि भी है । भारत सरकार इस वैचित्रमय भूमि को विश्व ऐतिहासिक क्षेत्र में लाने की प्रस्तुति कर रही है । अगर ऐसा हुआ तो यह भारत का सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक उपादानों से संपन्न विश्व का प्रथम ऐतिहासिक क्षेत्र होगा।

दुनिया का सबसे छोटा नदी-द्वीप बनाने का श्रेय भी ब्रह्मपुत्र को ही जाता है । उमानंद दुनिया का सबसे छोटा नदी-द्वीप है । गुवाहाटी शहर में स्थित यह नदी-द्वीप वस्तुतः एक छोटी-सी पहाड़ी है। प्राचीन ग्रंथों में यह द्वीप भस्माचल, भस्मकूट, भस्मशैल आदि कई नामों से जाना जाता है । उमानंद की धारणा नदी-द्वीप की कम और मंदिर की अधिक है । यहाँ एक शिव मंदिर है । आहोम स्वर्गदेउ गदाधर सिंह के निर्देश से 1694 ई॰ में गड़गञाँ संदिकै बरफुकन ने इस मंदिर का निर्माण किया था। उमानंद मंदिर के साथ इस द्वीप में और दो मंदिर हैं - एक चंद्रशेखर मंदिर और दूसरा है हरगौरी मंदिर । इस द्वीप के पास कर्मनाशा और उर्वशी नाम से और दो द्वीप हैं।

तंत्रशास्त्र के अनुसार पार्वती को विश्राम लेने की सुविधा कराते हुए महादेव ने अपने शरीर के भस्म से इस पर्वत की सृष्टि की थी। एक किंवदंती के अनुसार उमा यानी पार्वती को आनंद देने के उद्देश्य से महादेव इस जगह पर चिर विद्यमान रहते हैं। इसीलिए इसका नाम उमानन्द है। कई लोग इसे उमानाथ भी कहते हैं । एक दूसरी किंवदती के अनुसार महादेव ने अपनी तीसरी आँख से निकली अग्नि से कामदेव को इसी जगह भस्म किया था । इसीलिए यह द्वीप भस्माचल या भस्मशैल नाम से भी जाना जाता है। कहते हैं यह द्वीप मोर पक्षी-सा

दिखता है । इसीलिए अंगेजों ने इसका नामकरण Peacock Island किया था यानी मोर द्वीप । इस मंदिर की भूमि 16 बीघे से कुछ अधिक है।

पानी वहन की क्षमता की दृष्टि से भी ब्रह्मपुत्र ने विश्व अभिलेख किया है । ब्रह्मपुत्र एक साल में सबसे ज्यादा पानी बहन करता है। असम के धुबुरी के पास यह औसत के हिसाब से 22,000 घनमीटर पानी वहन करता है । बरसाती मौसम में यह संख्या प्रति सेकेंड 10,000 घनमीटर तक पहुँच जाती है।

ब्रह्मपुत्र विशालता का प्रतीक है, उदारता का चरम निदर्शन है। ब्रह्मपुत्र और इसके तट सबके लिए अपने हैं। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' के उद्देश्य से ब्रह्मपुत्र ने अपना पानी, अपने तट पर अर्पित किया है। इसी के लिए उसने अपना विकास ही कराया है। उद्गम-स्थल में ब्रह्मपुत्र केवल लगभग 100 मीटर चौड़ा है । पर डिब्रुगढ़ पहुँचते-पहुँचते यह चौड़ाई 10 किलोमीटर तक फैल गयी है। ब्रह्मपुत्र की कई छोटी-बड़ी उपनदियाँ हैं। असम में इन उपनदियों की संख्या 105 है । इनमें से सोवनशिरि, जीयाभराली, बरनदी, पुठिमारी, पागलादिया, मानाह, दिहिङ, दिबाङ, दिखौ, जाँजी, भोगदै, धनशिरि, कपिली, जीयाधल, रङानै, दिक्रङ, चम्पावती, सोणकोष, डिब्रु, बुढ़ीदिहिङ, डिगारु, कुलसी, शिङरा, दुधनै, कृष्णाइ आदि प्रमुख हैं। ये सभी उपनदियाँ जिधर से भी गुजरी हैं, वे वहाँ के जनजीवन का अभिन्न अंग बन गयी हैं। ब्रह्मपुत्र ने अपने सुदीर्घ गतिपथ में कई उपनदियाँ अपनायी भी हैं। यही नहीं, ब्रह्मपुत्र अपनी भुजाएँ फैलाए भारत की सभी जातियों, धर्मों एवं संप्रदायों के लोगों को बुला रहा है। ब्रह्मपुत्र ने अपने तट पर शंकरदेव, माधवदेव, ज्योतिप्रसाद आगरवाला जैसे महामनीषियों के पूर्वजों को आसरा दिया था। बगदाद से अजान फकीर यहाँ बसने आये थे । तभी तो इनकी अमर देन से असमीया जाति आगे बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, खासकर नेपाल और बांग्लादेश मूल के सैकड़ों लोगों की पहचान ब्रह्मपुत्र घाटी है है, जिन्हें संवैधानिक रूप से भी मर्यादा दी गयी है । आज भी व्यापारिक, शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि कई कारणों से भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों से लोग यहाँ आ रहे हैं । डॉ॰ भूपेन हाजरिका ने ब्रह्मपुत्र की इसी विशालता के कारण उसे 'महामिलनर तीर्थ' कहा है -

महाबाहु ब्रह्मपुत्र महामिलनर तीर्थ।
कत युग धरि आहिछे प्रकाशी समन्वयर अर्घ्य॥

(भावार्थ-- महाबाहु ब्रह्मपुत्र महामिलन का तीर्थ है। यह युगों से समन्वय का संदेश देता चला आ रहा है।)

असम का अतीत ब्रह्मपुत्र पर निर्भरशील था, असम का वर्तमान ब्रह्मपुत्र पर निर्भरशील है और असम का भविष्य भी ब्रह्मपुत्र पर ही निर्भरशील रहेगा। परम सौभाग्य से असम को यह नद प्राप्त हुआ है । ब्रह्मपुत्र का तटवर्ती इलाका अत्यंत उर्वर है । यहाँ अनायास ही खेती-बाड़ी

होती है। ब्रह्मपुत्र के दोनों ओर कई नगरों एवं शहरों का विकास हुआ है । इनमें गुवाहाटी, डिब्रुगढ़, धुबुरी, तेजपुर आदि प्रमुख हैं। इसी नद के तट पर ही कई मठ-मंदिर एवं पवित्र-स्थल हैं। बांग्लादेश के कई शहर भी इसके तट पर शोभयामान हैं। ब्रह्मपुत्र असमीया जाति की जान है। जन-विस्फोट के चलते शहरों में पानी की जो समस्या पूरी दुनिया में भयानक रूप ले चुकी है, असम में उसके समाधान का काम ब्रह्मपुत्र करता है। ब्रह्मपुत्र के पानी से ही गुवाहाटी महानगर के महानागरिकों की ज़िन्दगियाँ चल रही हैं । ब्रह्मपुत्र तथा इसकी उपनदियों में कपड़े धोकर वृहत संख्या में लोग आजीविका चला रहे हैं । साथ ही, इनमें मछली का शिकार कर जीवन निर्वाह करनेवाले लोग भी कम नहीं हैं। अब ब्रह्मपुत्र में छः पुल हैं-शराइघाट (दो), कलियाभोंमोरा, नरनारायण, बगीबिल और भूपेन हाजरिका पुल । ब्रह्मपुत्र में जल-परिवहन की व्यवस्था भी है। जल-मार्ग की परिवहन-व्यवस्था से जुड़े सरकारी जहाज और व्यक्तिगत नाव-सेवा से जुड़े लोगों के परिवार भी ब्रह्मपुत्र की कृपा से ही चलते हैं । सैकड़ों व्यवसायी ब्रह्मपुत्र से व्यापार करते हैं। ब्रह्मपुत्र ही इन व्यवसायियों के जीवन-संग्राम का साथी है। पार्वती प्रसाद बरुवा के गीत में वाणिज्य के साथ ब्रह्मपुत्र की घनिष्ठता अत्यंत सजीव रूप में प्रस्फुटित हुई है–

लुइतर चापरित करे नावरीया
बालित भाते राँधि खाय,
साउदर डिङरा बगा पालेतरा
उजनिर देशलै जाय।

(भावार्थ – कहीं से आया हुआ कोई माझी ब्रह्मपुत्र की बालू पर भात बनाकर खाता है। नाव लेकर व्यापारी ऊपरी असम तक जाता है।)

ब्रह्मपुत्र असम की आजीवन अनुभूति का हिस्सेदार है। देशभक्त तरुणराम फुकन के निधन के बाद मानो ब्रह्मपुत्र की झारियाँ भी रोने लगीं –

लुइतर पारर बालि चापरिर झाउ बन
पाते गाय
तरूण नाइ तरूण नाइ।

(भावार्थ – ब्रह्मपुत्र के तट की झारियाँ, वन और पत्ते गा रहे हैं – तरुण नहीं हैं, तरुण नहीं हैं।)

भारतरत्न भूपेन हाजरिका की मृत्यु के कुछ दिनों बाद ब्रह्मपुत्र का पानी अस्वाभाविक रूप से घटने लगा था । इसे लेकर पूरे असम में हाहाकार मच गया था । लोग अनेक संभावनाएं व्यक्त करने लगे थे । पर कुछ ही दिनों में ब्रह्मपुत्र फिर से भर गया । शायद भूपेन हाजरिका की मृत्यु के शोक में वह सूख गया था । लेकिन उसका क्षीणकाय रूप देखकर यहाँ के लोगों में जो व्यथा उत्पन्न हुई वह उससे देखी नहीं गयी। भूपेन हाजरिका को ब्रह्मपुत्र से क्या कम लगाव था ? ब्रह्मपुत्र के बिना उनके गीत अधूरे हैं।

ब्रह्मपुत्र और उसकी उपनदियों से असम की प्राकृतिक शोभा बन पड़ी है । साथ ही, वे समस्त असमभूमि को शांत हवा प्रदान करती हैं। ब्रह्मपुत्र

का पानी बिजली के उत्पादन में भी लगाया गया है। अब इस पर कई बाँध बनाने की योजना चल रही है। असम के स्थानीय दलों एवं संगठनों ने इसका तीव्र विरोध भी किया है। अरुणाचल की जनता ने भी विरोध-प्रदर्शन किया है। विशेषज्ञों के हवाले से इनका कहना है कि ऐसा करने से ब्रह्मपुत्र सूख जाएगा और धीरे-धीरे धरती का यह हरा-भरा भाग रेगिस्तान में तबदील हो जाएगा।

ब्रह्मपुत्र हमारे लिए सिर्फ एक नद नहीं है, वह प्रकृति का हमें दिया गया आशीर्वाद है। पर हम उसे सुव्यवस्थित ढंग से संभाल नहीं पा रहे हैं। नहीं तो क्या यह हमारे लिए भय और त्रास का कारण बनता ? बरसाती मौसम में बाढ़ और भू-कटाव के कारण हमें थरथर काँपना पड़ता है। भक्त जब कभी अनिश्चित कार्य करता है, तो भगवान उस पर क्रोधित होते हैं। हमने भी ब्रह्मपुत्र का उचित व्यवहार नहीं किया। इसी से तो समस्याएँ दिनों-दिन बढ़ती चली जा रही हैं। हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ने का ढोल स्वयं कितना भी क्यों न पीट लें, वे सब प्रकृति को नियंत्रित करने में असमर्थ हैं – इसका साक्षी है यह ब्रह्मपुत्र। ब्रह्मपुत्र की शक्ति और सृजनशीलता का भरपूर भोग कर सकने की कोई सफल योजना हमारे पास नहीं है। यहाँ, रांगेय राघव का विचार बिल्कुल खड़ा उतरता है। संपत्ति का होना और न होना – दोनों ही स्थितियों में संपत्ति मनुष्य के लिए समस्या है। संपत्ति का उचित नियंत्रण ही संपत्ति की समस्या का हल हो सकता है। ब्रह्मपुत्र हमारी संपत्ति है। इसके बिना आज असम के लोग जीवन की कल्पना सपने में भी नहीं कर सकते। इसके विपरीत बरसाती मौसम में इसके कारण जीना दुर्भर हो जाता है। ब्रह्मपुत्र का उचित नियंत्रण न कर पाना ही उससे उत्पन्न समस्याओं की जड़ है। अब यह अत्यन्त जरूरी हो गया है।

ब्रह्मपुत्र असमीया जातीय जीवन की नींव है। असम के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक जीवन का प्राण-बिन्दु है ब्रह्मपुत्र। असमीया लोक-साहित्य पर तो इसने अपना अच्छा दबदबा बना रखा है। बिहु हो या अन्य कोई गीत, मानो वे ब्रह्मपुत्र के प्रसंग के बिना पूरे ही नहीं हो सकते। साहित्य की कोई भी विधा इसके मोह से अछूती नहीं रही है। इसके बिना तो गीतकार की कलम भी रुक-सी जाती है। ब्रह्मपुत्र से संबंधित अनेक शोध-कार्य भी हो चुके हैं। निष्कर्ष यह है कि ब्रह्मपुत्र असमीया जनजीवन का मूलाधार है, असम की अस्मिता है, असमीया जातीय जीवन की आयु-रेखा है।

टिप्पणी :

इस आलेख में प्रसंगानुसार असमीया गीतों का लिप्यंतरण किया गया है। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा

सुरक्षित रहती है । असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं -- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं-- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है।

संदर्भ-ग्रंथ :

पाठक, तरणी और पाठक डाकुवा मनोमती. भूपेन हाजरिका गीत-समग्रर चमु विश्लेषण. प्रथम. आइकन प्रकाशन, गुवाहाटी : 2009.

बरुवा, शांतनु कौशिक. संक्षिप्त असमीया विश्वकोष खंड-1. चतुर्थ. ज्योति प्रकाशन, गुवाहाटी : 2009.

बरुवा, शांतनु कौशिक. संक्षिप्त असमीया विश्वकोष खंड-2. तृतीय. ज्योति प्रकाशन, गुवाहाटी : 2009.

शर्मा दलै, हरिनाथ. भारत-कोष, तृतीय. सरस्वती कमिउनिष्ट प्रेस, नलबारी : 2008.

संपर्क-सूत्र :
सहयोगी प्रोफ़ेसर
हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय
ई-मेइल : rita1@gauhati.ac.in